अशोक चण्डालिया

भारत की प्राचीन समृद्ध सांस्कृतिक परम्परा

बहुआयामी, विविधामयी समृद्ध मानवकल्याणकारी परम्पराओं को अपने विराट हृदय-सागर में समेटे हुए भारतवर्ष की परम वैभवशाली सांस्कृतिक परम्पराओं का सम्पूर्ण विश्व में अपना वैशिष्ट्य एवं अद्वितीय स्थान है। हमारी सांस्कृतिक परम्पराओं की विशालता का ही परिणाम है कि अनेकों सम्प्रदायों एवं विभिन्न संस्कृतियों को अपनानेवाले हजारों-हजारों लोग प्राचीनकाल से ही हमारे देश में सिर्फ शासन करने के उद्देश्यों से ही नहीं आये, अपितु अपनी-अपनी संस्कृतियों का प्रचार एवं इन्हें भारतवर्ष में स्थापित करने के इरादे लेकर भी आये थे। भारतवर्ष में आने के बाद वे यहाँ की मिट्टी, जलवायु के साथ ही सांस्कृतिक परम्पराओं से इतने प्रभावित हुए कि उन्हें अपनाने हेतु बाध्य हो गये। ऐसी मिशाल संसार में अन्यत्र कहीं भी दृष्टिगत नहीं होती है।

भारतवर्ष की संस्कृति की महानता है कि वह प्राणीमात्र को अपनत्व प्रदान करती है, अपने में आत्मसात् कर लेती है, ममत्व प्रदान करती है। यहाँ के लोग प्राणियों को ही नहीं प्रकृति को भी सम्पूर्ण आदर देते हुए नदियों की माता के रूप में पूजा करते हैं, पहाड़ों की वंदना करते हैं, यहाँ तक कि पत्थरों में भी अपनी श्रद्धाभक्ति के बल पर चमत्कार उत्पन्न करने में भी सफल रहे हैं। इन्हीं अकल्पनीय विशिष्टताओं के वशीभूत होकर देवता भी स्वर्ग छोड़ कर इस पावन धरा पर जन्म लेते रहे हैं। यहाँ अवतरित होने का लोभ संवरण नहीं कर सके हैं।

भारत की सभ्यता एवं संस्कृति उस युग में अपनी विकास यात्रा के चरमोत्कर्ष पर थी जब इस सृष्टि में अन्यत्र असभ्यता का बोलबाला था। एक सम्पूर्ण, सुव्यवस्थित समाज की रचना एवं सम्पूर्ण मानव की विकासगाथा भारत की धरती एवं संस्कृति के आंगन में उस काल में भी प्रफुल्लित-पल्लवित थी जब संसार के अन्य महाद्वीपों में जीव के विकास की प्रक्रिया प्रारंभिक चरण में अवस्थित थी।

हमारी समृद्ध प्राचीन सांस्कृतिक परम्पराओं की महानताओं के हजारों-हजार उदाहरण मानव इतिहास में भरे पड़े हैं। इस देवभूमि पर हजारों तपस्वी, साधक, ऋषि मुनियों ने जन्म लेकर अपने मानव कल्याणकारी उपदेशों से सम्पूर्ण विश्व का मार्गदर्शन किया है तो दूसरी ओर महादानी, पराक्रमी, शूरवीरों ने भी यहीं जन्म लिया है। एक ओर जहाँ वशिष्ठ, विश्वामित्र, बाल्मिकी, शृंगी, याज्ञवल्क्य, वेदव्यास, अगस्त्य जैसे तपस्वी हुए हैं तो दूसरी ओर जनक, भागीरथ, विक्रमादित्य, अशोक, अर्जुन जैसे महाप्रतापी भी यहीं पर पैदा हुए। इस पावनधरा की प्रतिष्ठा की पराकाष्ठा देखिये जहाँ स्वयं ईश्वर नरनारायण का स्वरूप लेकर राम, कृष्ण, महावीर और बुद्ध के रूप में इस सृष्टि के प्राणीमात्र का उद्धार करने जन्म लेते हैं। ऐसी पावन धरती को कोटिश: नमन्।

भारत की संस्कृति में पूरे विश्व को उद्वेग, आवेश को योग से, क्रोध को करुणा से, हिंसा को अहिंसा से एवं लालच को त्याग से जीतने की राह दिखाई है। हमारी सांस्कृतिक परम्पराओं की विशालता एवं विशिष्टता का ही परिणाम है कि सम्पूर्ण एशिया महाद्वीप में समस्त सम्प्रदायों मतावलम्बियों में हमारे त्योहारों, उत्सवों, रहन-सहन, पहनावे को अपने-अपने तरीकों से प्राचीनकाल से आजतक अपनाते आ रहे हैं। आज के भीषण संघर्षशील युग में परमाणु अस्त्र-शस्त्रों से प्राणीमात्र एवं इस सृष्टि की रक्षा करने का ब्रह्मास्त्र 'अहिंसा परमो धर्म' भी भारतवर्ष की धरा पर अवतरित महावीर ने दिया, पंचशील का मार्ग भी महात्मा बुद्ध ने दिखाया। कई देशों में आज भी रामलीला का मंचन हो रहा है तो दूसरी ओर विकास की अंधी दौड़ में अपने जीवनमूल्यों के ह्रास से पस्त पश्चिमी जगत के लोग 'गीता' से अपने जीवन को संवारने में अपने को धन्य मान रहे हैं। भारत की सांस्कृतिक परम्पराओं का ही चमत्कार है जहाँ दो गंगा-जमुनी विचारधाराएँ साथ-साथ मानव को जीवन के रहस्य

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समझाती हैं। एक ओर कर्मयोग की परम्परा है तो दूसरी ओर भक्तियोग की धारा।

इस पावनधरा की सांस्कृतिक परिपक्वता का ही कमाल है जहाँ मातृभूमि की रक्षा हेतु प्रताप घास की रोटियों पर निर्वहन करते हैं, लक्ष्मीबाई, सावरकर, भगतसिंह, शिवाजी इस धरा के स्वाभिमान की रक्षा हेतु प्राणों की आहुतियाँ देते हैं। हमारी संस्कृति की ही विशेषता है जहाँ पर विश्वविजेता सिकन्दर को परास्त कर उसे क्षमादान भी दिया जाता है। 'क्षमा वीरस्य भूषणम्' का मंत्र दिया।

वर्तमान युग महत्वकांक्षाओं एवं स्पर्धाओं से भरा युग है। चहुं ओर एक होड़ की दौड़ दृष्टिगत हो रही है। विकसित देश अपने संसाधनों के जरिये पूरे विश्व में अपना पूरा वर्चस्व कायम करने को आतुर हैं। तरह-तरह के आयुधों एवं प्रतिबंधों से विश्व के देशों की भयभीत करते हैं लेकिन भारतवर्ष की उर्वरा संस्कृति का ही परिणाम है इस देश में पैदा हुए मानव रत्नों ने हर तकनीक का भारतीय संस्करण तैयार कर अपने को श्रेष्ठ साबित कर दिया है। अब तो विकसित देश घबरा कर आउटसोर्सिंग का रोना रो रहे हैं। भारत की सांस्कृतिक परम्परा में पले, बढ़े सपूत पूरे संसार में अपनी छाप छोड़ रहे हैं। अपनी कौशलता का लोहा मनवा रहे हैं।

भारतीय सांस्कृतिक परम्पराओं में ही समन्वय, संवाद, सहयोग, मानवता, दया, करुणा, स्नेह, आत्मीयता, सम्मान, सत्कार जैसे अमूल्य गुण पाये जाते हैं, संसार में अन्यत्र नहीं। विकसित देशों ने अपरोक्ष रूप से हमारी सांस्कृतिक परम्पराओं को दूषित करने हेतु विभिन्न माध्यमों के जरिये एक भारी अभियान चला रखा है इनमें इलेक्ट्रानिक मिडिया अहम है। विभिन्न सेटेलाइटों के जरिये कई दूषित कार्यक्रमों का प्रसारण कर हमारी सामाजिक संरचना, सांस्कृतिक परम्पराओं, सामाजिक मर्यादाओं एवं हमारे रहन-सहन के शालीन तौर-तरीकों को दूषित कर हमारी युवा पीढ़ी को हमारी परम्पराओं से विलग करने पर तुले हुए हैं। एक बार फिर हम सबकी महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है कि प्राचीन काल से अब तक हमारी अमूल्य सांस्कृतिक धरोहर को हमारे पूर्वजों ने सुरक्षित रखा है हमें भी उसी परम्परा को कायम रखते हुए इसकी रक्षा करनी होगी अन्यथा दूषित संस्कृति के भटकाव से हमारी भावी पीढ़ी तो अंधकार के गर्त में जायेगी ही साथ ही हमारी पुरातन, सनातन संस्कृति जो वर्षों से अक्षुण्ण रही है, वह अपना असली स्वरूप कहीं खो नहीं दे। आज हमें इसकी चिंता कर हमारे युवाओं को यह सीख देनी होगी कि हमें इस बात का गर्व होना चाहिये कि हमने कर्ण, विक्रमादित्य जैसे दानियों, कौटिल्य जैसे अर्थशास्त्री, मनु जैसे समाजसंरचक, मीरा, कबीर, सूर, तुलसीदास जैसे भक्तिवान उपदेशकों, मर्यादापुरुषोत्तम राम, कर्मयोगी कृष्ण, अशोक, अर्जुन, प्रताप जैसे शूरवीरों, भगवान महावीर, बुद्ध जैसे महामानवों की धरती पर जन्म दिया है। हमारी सांस्कृतिक परम्पराओं की ही देन है कि हमारे देश में हजारों जातियों, धर्मों, सम्प्रदायों के लोग आज भी पूरी आत्मीयता, बंधुत्व, सहिष्णुता एवं परस्पर सहयोग कर शांति से निवास करते हैं। यह सब समृद्ध भारतीय प्राचीन सांस्कृतिक परम्पराओं की देन है। हमारी सांस्कृतिक परम्पराएँ एक माला का स्वरूप है जिसमें विभिन्न सम्प्रदाय एक मोती की तरह पिरोये गये हैं।

हमारी प्राचीन एवं समृद्ध सांस्कृतिक परम्पराओं के कारण भारतवर्ष पहले भी विश्वगुरु था और हम सब यह संकल्प करें कि भविष्य में फिर भारत विश्वगुरु के पद पर आसीन हो।

भारत की वीरांगनाएँ अपनी परम्परा एवं मर्यादाओं की रक्षा हेतु जौहर करती हैं तो दूसरी ओर प्रकृति की रक्षा हेतु पेड़ों को बचाने अपनी जान न्यौछावर कर देती हैं ऐसी महान सांस्कृतिक परम्पराओं की धरती को नमन्।

कपासन, जिला : चित्तौड़गढ़ (राज.)

■

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org